भैरव की सर्वव्यापकता पर ध्यान

विज्ञानभैरव से एक धारणा

ध्यान में प्रवेश करते हुए, इस धारणा पर केन्द्रण करें।

भैरव [चिति] की अवस्था का ज्ञान हर कहीं और किसी को भी हो सकता है।
यह जान लेने पर कि जिसका भी अस्तित्व है वह और कुछ नहीं, चिति ही है,
साधक चिति के साथ ऐक्य प्राप्त करता है।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

विज्ञानभैरव १२४; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®।